फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://www.faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 259 1/- जनवरी 2010

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (16)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✶ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✶ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✶ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✶ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✶ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

✶ पचास-पचपन वर्षीय मेहनतकश : सुबह उठने का समय बदलता रहा है। इधर फिर रंगाई-पुताई का काम करने लगा हूँ इसलिये सुबह 7 बजे उठता हूँ.....

हम 8 भाई-बहन थे। जमीन कम थी इसलिये पिताजी चिनाई करते थे। बड़े भाई कानपुर में कुछ दिन काम करने के बाद खेती के संग चिनाई करने लगे। स्कूल में मेरा मन नहीं लगता था क्योंकि वहाँ मास्टर के शासन में बैठना पड़ता था। पाँचवीं में मास्टर द्वारा पीठ पर मारा डण्डा याद है। फिर नहीं पढा और गाय-भैंस चराने लगा।

पिताजी और बड़े भाई चिनाई करते। मुझ से बड़े दो भाई फरीदाबाद नौकरी करने लगे और मुझ से छोटा पढता था। बहनों की शादी हो चुकी थी। मैं खेती करने लगा। बैलों से हल जोतना। रहट, चरखी, बेड़ी से सिंचाई। गुड़ बनाना। आपसदारी में चाचा-ताऊ के काम करवा देता और वह हमारे काम करवा देते। मौका मिलने पर मजदूरी भी कर लेता पर तब दिहाड़ी में पैसे नहीं थे, अनाज देते थे – 2 से 3 किलो जौ, मटर, धान। गाने और नौटंकी का शौक था पर पिताजी को यह पसन्द नहीं था.....

सात वर्ष का था तब मेरा ब्याह हुआ था। बारात पैदल गई थी। फूफा मुझे कन्धे पर बैठा कर भी ले गये थे। गौना 11 वर्ष बाद हुआ। बेटा हुआ। हाथ में पैसे नहीं होते थे। माँ से माँगने पड़ते। पत्नी कुछ न कुछ कहती.....

घर में क्लेश। पत्नी और भाभियों में तू-तू, मैं-मैं। भाभियों के ताने – काम नहीं करता, घूमता रहता हूँ। गुस्से में कभी कोई कुछ कहे तो कभी कोई और कुछ कहे। मैं गुस्से में बैठ जाता। काम करने से मना कर देता....

चाचा के पास कानपुर गया। विक्टोरिया मिल में बॉयलर पर राख निकालने में लगवा दिया। दो दिन बाद काम छोड़ दिया। कानपुर घूम कर गाँव लौटा। एक से पचास रुपये उधार लिये और रिश्तेदारी में जाने की कह कर लुधियाना चला गया।

साइकिल के पुर्जे बनाने वाली वर्कशॉप में लगा। तनखा 130 रुपये। आटा 60-70 पैसे किलो और 50 पैसे का पाव दूध था। एक के साथ 20 रुपये किराये वाले कमरे में रहता। भोजन बुरादे की अँगीठी पर बनाते, महीने की खुराकी 30-40 रुपये। इंजन के पुर्जे बनाने वाली वर्कशॉप में लगा और फिर नट-बोल्ट बनाने की फैक्ट्री में तनखा 180 रुपये..... महीने में 100 रुपये बचते। माँ के मरने का तार एक हफ्ते की देरी से मिला.......

फैक्ट्री में खटपट पर नौकरी छोड़ वर्कशॉप में फिर काम करने लगा था जब फरीदाबाद में एक्सीडेन्ट में छोटे भाई की मृत्यु का तार मिला. ... मुझे अँग्रेजी नहीं आती और वर्कशॉप वाले ने मुझे बताया नहीं, गाड़ी में बैठा दिया.....

घर पर रहने से मैंने इनकार कर दिया। भाई ने मुझे फरीदाबाद बुला लिया। यहाँ मैं ओरियन्ट स्टील फैक्ट्री में भट्ठी पर हैल्पर लगा और संग-संग भाई के एक साथी की पान की दुकान चलाने लगा। तीन शिफ्टों में ड्युटी थी और मैं रोज 4-6 घण्टे तथा रविवार को 16 घण्टे पान की दुकान पर बैठता। हर समय जेब में पैसे रहते। एक भाई की फैक्ट्री बन्द हो गई थी और दूसरे की फैक्ट्री में लफड़ा चल रहा था। दुकान के कारण मैं ओवर टाइम पर नहीं रुकता था, तबीयत खराब बता देता। मुझे लगवाने वाले सुपरवाइजर नौकरी छोड़ गये उसके दो महीने बाद मुझे नौकरी से निकाल दिया गया।

मौके की जगह, मुजेसर फाटक पर पान की दुकान थी। मैं रोज 16 घण्टे बैठने लगा। अपनी जगह बता कर एक गाँव वाले ने वहाँ से दुकानें हटवा दी......

गाँव गया और लौट कर सैक्टर-6 में निक्कीताशा फैक्ट्री के सामने पान का खोखा लगाया। एस्कोर्ट्स पर कब्जे के झगड़े के दौरान नन्दा मैनेजमेन्ट ने निक्कीताशा फैक्ट्री बनाई थी। बड़ी सँख्या में मजदूर थे और तीन बसों में दिल्ली से स्टाफ आता था। पान-सिगरेट की बहुत बिक्री होती थी। पर ढाई साल बाद अचानक यहाँ से स्टाफ व वरकर वापस एस्कोर्ट्स चले गये। चौथाई से भी कम बिक्री हो गई..... मैं सैक्टर-11 में ओरियन्ट बैंक के सामने पहुँचा और फिर बाटा मोड़ पर। तंग हो कर मैंने सजा-धजा पान का खोखा बेच दिया। पत्नी और बेटे को ले आया था......

(बाकी पेज दो पर)

दो महीने भाई की रेहड़ी पर पनिहारी-मनिहारी का सामान घूम-घूम कर बेचा। पचास प्रतिशत बचत होती है और जनानियों से हँसी-मजाक भी। पर छोटे-मोटे सामान उड़ा भी लिये जाते है.....

सब्जी बेचने का तय कर भाई से 500 रुपये

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

वरुण प्रिसिज़न कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 216 व 220 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, रविवार को भी। महीने में कोई छुट्टी नहीं। यहाँ **हीरो होण्डा** के गियर तैयार होते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3600 रुपये। क्वालिटी में 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3000-4200 रुपये। ब्रोच और सी एन सी विभागों में 8 घण्टे पर 30 दिन के 3000-3300 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, नवम्बर की 16 दिसम्बर को दी। एक सौ मजदूरों में से 4-5 के ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं, बाकी स्टाफ के हैं। वर्दी-जूते नही। सवेतन तथा आकस्मिक छुट्टियाँ नहीं। बोनस नहीं। जरा-सी गलती पर नौकरी से निकाल देते हैं। गुड़गाँव में **शिवम् ऑटो** से एक गाड़ी माल रोज यहाँ आता है और तैयार माल जाता है।"

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3914 रुपये (8 घण्टे के 151 रुपये)।

सुप्रीम इन्टरप्राइजेज श्रमिक : "2 धर्म काँटा रोड़, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 12 बजे की एक शिफ्ट है। रविवार को 20 घण्टे भी काम करना पड़ता है। जबरन रोकते हैं, नहीं रुको तो कल से मत आना। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर, मारुति सुजुकी, एस के एच** का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2800-3500 और ऑपरेटरों की 3000-4500 रुपये। तीस पावर प्रेस हैं, उँगली बहुत कटती हैं। एक्सीडेन्ट के बाद ई.एस.आई. करवाते हैं और उपचार के बाद ज्यादातर लोग चले जाते हैं। कम्पनी ने स्वयं 15 मजदूर भर्ती किये हैं और 50 को ठेकेदार के जरिये रखा है। शौचालय जाम रहता है, मजदूर बाहर पार्क में जाते हैं।"

गुडविल इंजिनियर्स कामगार : "पृथला-धतीर रोड़ पर दुधौला स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2700-2800 और पावर प्रेस ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। रजिस्टर में तनखा 3971 रुपये दिखाते हैं। सुबह 9 से रात 9 की एक शिफ्ट है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **हीरो होण्डा** और **जे सी बी** के पुर्जे बनते हैं। सवा सौ मजदूरों में 17-18 की ई.एस.आई है, पी.एफ. किसी का नहीं। पावर प्रेस पर हाथ कटते रहते हैं, हाथ कटने के बाद ई.एस.आई. करवाते हैं और फिर नौकरी से निकाल देते हैं।"

फरीदाबाद बोल्ट टाइट वरकर : "प्लॉट 77 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2850 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सवा सौ से ज्यादा मजदूर हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. 20 की ही हैं।"

प्रेसको मेक मजदूर : "9 डी सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ और साँय 6 से अगले रोज सुबह 8 तक की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

कटलर हैमर मजदूर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर 15-17 प्रतिशत बचे हैं और कम्पनी ने इन्हें 15 वर्ष से ज्यादा ही दुखी कर रखा है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को रोज जलील होना पड़ता है। हर वर्ष 31 मार्च को नौकरी से निकालते हैं और फिर भर्ती के समय हाँके जाने की स्थिति रहती है। उत्पादन कार्य के लिये गुडविल, ओम, ग्लोबल, स्टार ठेकेदारों के जरिये एक हजार से अधिक मजदूर रखते हैं। फिर सुरक्षा कर्मी, सफाई कर्मी, माली, लकड़ी का काम करने वाले, और पीस रेट वालों को भी ठेकेदारों के जरिये रखते हैं। पहुँचने में एक मिनट देर हो जाने पर वापस भेज देते हैं। छूटने पर चार पंक्तियों में खड़ा होना पड़ता है। टोकन नम्बर लिखे जाते हैं। गार्ड कम हैं और मजदूर ज्यादा, इसलिये फैक्ट्री से निकलने में इस सब के कारण 20-30 मिनट लग जाते हैं। कार्मिक प्रबन्धक गुस्सा आने पर गार्डों को 20 मिनट रोक कर छोड़ने का आदेश दे देता है। सुरक्षा कर्मी और उत्पादन कर्मी, दोनों मजदूर हैं और दोनों को ठेकेदारों के जरिये रखा गया है पर हालात ऐसे हैं कि एक-दूसरे का मन खराब करते हैं। कम्पनी काम का दबाव बढाती रहती है — पैकिंग विभाग में 50 मजदूर थे, 25 कर दिये हैं। अत्याधिक काम का बोझ एक विभाग के मजदूरों में भी खटपट पैदा करता है। असेम्बली विभाग में सुपरवाइजर गाली भी देते हैं। बीस दिन पर एक सवेतन छुट्टी अनुसार वर्ष में जो छुट्टियाँ बनती हैं उन में से 8-9 को हेराफेरी कर खा जाते हैं। बोनस देते ही नहीं। साइकिल स्टैण्ड फैक्ट्री के बाहर बना रखे हैं। साइकिलें चोरी होती रहती हैं। कम्पनी जिम्मेदारी नहीं लेती, भुगतें मजदूर। स्टैण्ड से 23 दिसम्बर को फिर एक मजदूर की साइकिल चोरी हुई। ठेकेदार को बताया और कार्मिक प्रबन्धक को आवेदन दिया। मैनेजर से 28 दिसम्बर को कार्रवाई के बारे में मजदूर ने पूछा तो साहब गुस्सा हो गये, गाली दी, थप्पड़ मारा, गेट बाहर कर दिया। साथियों के साथ जा कर मजदूर ने पुलिस चौकी में शिकायत की। उप श्रमायुक्त को आवेदन दिया। छाप कर पर्चे बाँटे। गत्तों पर बातें लिख कर सड़क पर खड़े हुये........ साइकिल के बदले मजदूर को 1000 रुपये दिये, धमकाया-पुचकारा, दादागिरी की, बिचौलियों ने मैनेजर द्वारा माफी माँगने को सुनिश्चित करने की बातें।"

जे बी इन्टरप्राइजेज श्रमिक : "एफ सी ए 228 एस जी एम नगर स्थित वर्कशॉप में हैल्परों की तनखा 2000-2500 और पॉवर प्रेस ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। ई.एस.आई. 15 में से 4 मजदूरों की। शिफ्ट 12 घण्टे की, रविवार को 4 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा देरी से।"

आप-हम....(पेज एक का शेष)

लिये। रेहड़ी 200 में खरीदी। मण्डी से सब्जी या फल खरीदता और बस्तियों में घूम-घूम कर बेचता। गलियों में सतरह किस्म के ग्राहक मिलते हैं। सब्जी के संग एक वर्कशॉप मे पीस रेट पर हैण्ड मोल्डिंग का काम किया। दिवाली के समय ठेकेदार के संग सफेदी भी की। झुग्गी खरीदी, बेची, फिर खरीदी। हैण्ड मोल्डिंग में ताकत लगती है और गर्मी वाला काम है। सब्जी बेचने से झिक लिया.....

कबाड़ी का काम करने लगा। गली-गली साइकिल पर बोली लगाना। लोहा, प्लास्टिक, कागज, ताम्बा, पीतल, अल्युमिनियम, बोतलें एकत्र करने सुबह 4 बजे निकल पड़ता। सुबह-सवेरे चौकीदार चोरी-छिपे सस्ते में माल बेचते हैं। दोपहर 2 बजे तक चक्कर लगाता। हरियाणा सरकार ने दारू बन्द की तब पव्वे-बोतल बन्द होने से आमदनी घट गई.....

तीन महीने सैक्टर-59 में एक फैक्ट्री गेट पर गार्ड की ड्युटी की। बारह घण्टे, तीसों दिन.... रात को सोने पर चिक-चिक पर नौकरी छोड़ दी।

दस वर्ष पहले मकानों की रंगाई-पुताई का काम शुरू किया। खुद करता हूँ और 2-4 मजदूर भी साथ रख लेता हूँ। दस साल पहले सब चूना पुतवाते थे, अब 90-100% पेन्ट करवाते हैं। चूने का काम इतना नुकसानदायक नहीं था। प्लास्टिक पेन्ट, डिसटेम्पर, इनेमल, एपेक्स पेन्ट साँस, आँख के लिये बहुत नुकसानदायक हैं। रेग्मार लगाते समय पुराने पेन्ट की केमिकल वाली धूल फेफड़ों में जाती है। रसायनों से हाथ खराब हो जाते हैं। दिवारों में लगाने वाली पुट्टी पाउडर रूप में आती है और हाथ की चमड़ी को चाट जाती है। पेन्ट से धूप में इतनी रोशनी लगती है कि करने वाला अन्धा हो जाता है.....

किराये पर सीढी ले कर 2002 में सफेदी कर रहा था। सीढी टूट गई — 18 फुट ऊँचाई से गिरा। पाँव की एड़ी ऐसी टूटी की एक साल चल नहीं सका। बचत से और बिजली का काम करने लगे लड़के की कमाई से खर्च चलाया। फिर रंगाई-पुताई के ठेके लेना.... कुल मिला कर मजबूरियाँ हैं जो इस को छोड़ कर उसको करते हैं और घूम-फिर कर लौटते रहते हैं।

ऊब गया सफेदी के काम से। ऊपर चढना, पोतना, पेन्ट करना। मेहनत का, धूल-मिट्टी का काम अब अपने बस का नहीं है....

2008 की दिवाली के बाद रेहड़ी पर मूँगफली, बीड़ी-सिगरेट बेचनी शुरू की। मार्च 09 से जूस बेचने लगा। पर सितम्बर 09 से फिर सफेदी करने लगा हूँ...... मूँगफली नहीं लगाई क्योंकि उसमें तगड़ी ड्युटी है — सुबह 8 से रात 11 बजे तक सर्दी में ग्राहकों का इन्तजार करना।

गुस्सा आता है जब पत्नी कहती है कि इतने दिन किया ही क्या? तीस साल हो गये गाँव छोड़े। कमा कर अच्छा घर-द्वार बनाने की इच्छा थी, पर बनी झुग्गी। हिम्मत हार गया हूँ..... उम्मीद है कि लड़का हमें सम्भालेगा, धक्के नहीं मारेगा। (जारी)

गुड़गाँव में मजदूर

सरगम एक्सपोर्ट मजदूर : " 152 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग होती है – सिलाई कार्य फेज-1 में 153 व 210 तथा फेज-5 में 224 व 540 प्लॉट स्थित फैक्ट्रियों में होता है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर भेदभाव तथा रिश्वत का बोलबाला है। जो जान-पहचान के नहीं हैं उन से भर्ती के लिये 500 रुपये और फिर हर महीने तनखा से 500 रुपये साहब लोग लेते हैं। खाली कैन-ड्रम के लिये रिश्वत लेते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छुट्टी नहीं देते। अक्टूबर में काम कम था तब प्लॉट 152 में एक मंजिल पर ही 400 फिनिशिंग मजदूर काम करते थे, अब तीनों मंजिलों पर काम, 700-800 मजदूर हैं। एक पीस खराब होने पर 29 अक्टूबर को 3 मजदूरों को नौकरी से निकाला। जान-पहचान के दो को 7 नवम्बर को हिसाब दे कर बाद में फिर रख लिया। मुझ से इस्तीफा लिखवा, हस्ताक्षर करवा कर बोले कि पैसे खत्म हो गये, 10 को लेना। दस नवम्बर को बोले कि 10 दिसम्बर को आना, हिसाब 10 को दिया जाता है। दस दिसम्बर को गार्ड बोला कि नियम बदल गये हैं, नोटिस लगा है, 10-15 के बीच इस्तीफा दो, पैसे 22 को मिलेंगे। भोजन अवकाश में 22 दिसम्बर को मैं पैसे लेने पहुँचा तो बोले कि 2 बजे आना। मैंने आधे दिन की छुट्टी की। पाँच बजे बोले कि सूची में मेरा नाम नहीं है..... तभी प्लॉट 153 में टी-ब्रेक हुआ था। वहाँ से घुस कर मैं कार्मिक विभाग में पहुँचा तो अधिकारी मुझे निकालने के लिये गार्ड बुलाने को बोले। मैंने हँगामा किया तब अफसरों ने 1 से 5 जनवरी के बीच फिर इस्तीफा देने के बाद 12 जनवरी को पैसे देने की बात की। इस प्रकार अक्टूबर में 29 दिन काम के पैसे मुझे आज 31 दिसम्बर तक नहीं दिये हैं। इन पैसों के फेर में एक जँगह मेरी नौकरी भी छूटी।"

शाइनिंग इम्पैक्स श्रमिक : " 254 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 10½ की शिफ्ट हर रोज है – रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3914 रुपये और सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 160-170 रुपये..... करीब 250 मजदूर हैं और इनचार्ज हर महीने प्रत्येक मजदूर से 500 रुपये रिश्वत लेता है – पैसे नहीं देने पर नौकरी से निकाल देता है।"

ज्योति एक्सपोर्ट कामगार : " 124 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3515 और सिलाई कारीगरों की 4200-4300 रुपये। बहुत गाली देते हैं और इनचार्ज हर महीने हैल्परों से 500 रुपये कमीशन लेता है।"

ऋचा एण्ड कम्पनी वरकर : " 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुपरवाइजर तथा मैनेजर हर महीने हैल्परों से 500 रुपये रिश्वत लेते हैं। साहब बहुत गाली भी देते हैं।

"ऋचा कम्पनी की 193 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 व 9½ बजे कार्य आरम्भ होता है। साँय 5¾ व 6¼ तक भोजन अवकाश व चाय के लिये समय देते हैं पर उसके बाद लगातार काम। रात 11, 12, 1 अथवा पूरी रात काम हो, कोई अवकाश नहीं देते। दिन में दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से। पूरी रात रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। इनचार्ज और प्रोडक्शन मैनेजर बहुत गाली देते हैं। मामूली नुक्स पर नौकरी से निकाल देते हैं।"

भोरजी सुपरटैक मजदूर : " 272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में डेढ-दो सौ हैल्परों की तनखा 3000-3200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, रविवार को 12 घण्टे ओवर टाइम। महीने में एक दिन भी काम से छुट्टी नहीं। सब मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, नवम्बर की 24-25 दिसम्बर को दी। दिवाली पर आधा बोनस दिया, आधा अभी भी बाकी है। शौचालय में पानी होता ही नहीं। यहाँ **बजाज कूलर** और भोरजी इंजेक्शन मोल्डिंग मशीनें बनती हैं।"

गुलाटी एक्सपोर्ट हाउस श्रमिक : " 203 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और सब की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। साल-भर पहले नौकरी छोड़ कर मैंने 26 महीनों के फण्ड के लिये कम्पनी से फार्म भरवाया जिसे भविष्य निधी कार्यालय ने यह कह कर वापस भेज दिया कि पैसे जमा नहीं हैं। दूसरी बार कम्पनी से फार्म भरवा कर जमा करवाया तब भी पैसे जमा नहीं हैं की टिप्पणी के साथ फार्म लौट आया। तीसरी बार भरवाने फैक्ट्री गया तो बोले कि फार्म भरने वाला हिसाब ले गया, नया आयेगा वह भरेगा.....

"गुलाटी एक्सपोर्ट की प्लॉट 2 सरोल मोड़, सैक्टर-18 स्थित फैक्ट्री में काम करते चार हजार मजदूरों में से अधिकतर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 3000-3200 रुपये। हर रोज 16 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में **गैप, पोलो, वेरीटास, स्टाइल एण्ड को** का माल बनता है। बायर आये उस महीने कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से किया पर अगले महीने तनखा से पैसे काट लिये।"

गौरव इन्टरनेशनल वरकर : " 198 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दो हजार से ज्यादा मजदूर सुबह 9 से रात 10-12-2 बजे तक काम करते हैं। दिन के दो घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी समय के सिंगल रेट से। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के पैसे नहीं देते। छुट्टी देते ही नहीं – बुखार होने पर भी काम करो। गाली देते हैं। फैक्ट्री में **गैप** का माल बनता है। कम्पनी की प्लॉट 236 वाली फैक्ट्री में सुबह 9½ से साँय 6 की ड्युटी। दो महीनों से फिनिशिंग विभाग के 250 मजदूरों के कार्ड साँय 6 बजे पंच होते पर महीने में 5-6 रोज रात 11 बजे तक मैनेजर काम करवाता। पाँच घण्टे अतिरिक्त काम के पैसे नहीं। इसके खिलाफ 23 दिसम्बर को फैक्ट्री में हँगामा हुआ और तब से साँय 6 बजे हमें छोड़ देते हैं।"

छुट-पुट

★**सरकारी सर्वेक्षण :** भारत में 85 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्रों का वायु, जल और भूमि प्रदूषण स्तर स्वास्थ्य के लिये खतरनाक।

★**ब्रिटेन में एक जाने-माने जीवाणु विशेषज्ञः** अस्पतालों में हाथ धोने से बीमारियाँ फैलती हैं। अस्पतालों में नलों में आमतौर पर खतरनाक कीटाणु अपने डेरे जमाये रहते हैं।

★ 30.12.2009 के 'आज समाज' का सम्पादकीय : अब तो हालात इतने खराब हो गये हैं कि पुलिस से अपराधियों को डरना चाहिये लेकिन डरता आम नागरिक है।

★**केरल का मुख्यमन्त्री :** राज्य ने मानव संसाधन विकास क्षेत्र में अच्छी प्रगति की है, इसके बावजूद राज्य में आत्महत्या करने की उच्च दर चिंता का विषय है। केरल में प्रति एक लाख की आबादी पर आत्महत्या करने की दर 33 है, जो राष्ट्रीय औसत से दुगुनी है।

★**चीन सरकार की समाचार एजेन्सीः** राष्ट्रीय स्तर पर करवाये गये ऑडिट से अधिकारियों द्वारा 34 अरब 40 करोड़ डॉलर की भारी-भरकम राशि की चोरी या दुरुपयोग की बात सामने आई है।

★**अफगानिस्तान** में सन् 2001 से अमरीका सरकार और सैन्य संगठन नाटो की सेनायें कब्जा जमाये हैं। स्थानीय निवासी बड़ी सँख्या में मारे जा रहे हैं..... अमरीका सरकार और नाटो के सैनिकों का मारा जाना बढ रहा है। सन् 2008 में अमरीका सरकार के 155 सैनिक अफगानिस्तान में मारे गये थे और 2009 में इनकी सँख्या दुगुनी हो कर 310 हो गई।

★राज्यों की पुलिस, राज्यों की सशस्त्र पुलिस के संग 80 हजार सशस्त्र केन्द्रिय अर्द्ध सैनिक बलों के लोग और वायु सेना भारत में गरीबों पर हमलों के लिये तैयार कर दिये गये हैं। सीमा सुरक्षा बल और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र में मोर्चों पर। सीमा सुरक्षा बल की वायु शाखा के तीन अत्याधुनिक ध्रुव हैलीकॉप्टर रांची और रायपुर में तैनात किये जा चुके हैं। सी आर पी एफ के 58 हजार सैनिक हमलों में शामिल होंगे। जी पी एस उपकरणों समेत विभिन्न तकनीकी उपकरणों और उपग्रह चित्रों की मदद सरकार ले रही है। कमाण्डों को पहुँचाने और घायल सैनिकों को निकालने के लिये दस हैलीकॉप्टर, अनुबंध के आधार पर 80 विशेषज्ञ चिकित्सक नियुक्त। सरकारों के "अपने-अपने" नागरिकों के खिलाफ युद्ध जारी हैं, बढ रहे हैं। पाकिस्तान में सरकार की फौजों द्वारा बड़े क्षेत्र पर हमला। भारत सरकार की सेनाओं द्वारा उत्तर पूर्व और कश्मीर में दीर्घ काल से जारी आक्रमण का विस्तार है यह नया युद्ध, बंगाल-बिहार-उड़ीसा-झारखण्ड-छत्तीसगढ-आन्ध्र प्रदेश-महाराष्ट्र- ..... में गरीबों पर हमले।

दिल्ली में मजदूर

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●फैक्ट्रियों में हर मजदूर का कर्मचारी राज्य बीमा, ई.एस.आई. होनी चाहिये। मजदूर दो-चार दिन के लिये भर्ती की गई हो चाहे ठेकेदार के जरिये रखा गया हो – प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. होनी चाहिये। फैक्ट्री में काम करते किसी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है : कम्पनी तथा सरकार के अनुसार वह मजदूर फैक्ट्री में काम नहीं करता-करती। ● *दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल श्रमिक 3953 रुपये (8 घण्टे के 152 रु.); अर्ध-कुशल श्रमिक 4119 रुपये (8 घण्टे के 159रु); कुशल श्रमिक 4377 रुपये (8 घण्टे के 169 रु)।*

शर्मा इन्टरनेशनल मजूदर : "ए-278, सी-27, सी-119 तथा एफ-53 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में **शिव, शर्मा, कृष्ण लोर्ड** नाम हैं कम्पनियों के। जाँच वाले सी-119 में ही आते हैं, मजदूरों से मिलते ही नहीं और शर्मा इन्टरनेशनल के नाम पर खानापूर्ति कर जाते हैं। सी-27 में सुबह 8 से रात 8 ½ की और बाकी में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है – रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान 100 मजदूरों को दुगुनी दर से और 900 को सिंगल रेट से। एक सौ में से 80 महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये, साप्ताहिक छुट्टी नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और तनखा देरी से, 18-28 तारीख को जा कर। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 158 रुपये और 700 टेलरों में से 600 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

आर जी सी इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "सी-63/4 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9 की शिफ्ट है और रात 2 तक, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं – महिला मजदूरों को भी रात दो बजे तक। रविवार को सुबह 9½ से साँय 6 तक काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर, 60 कैजुअल वरकर और ठेकेदार के ज़रिये रखे 300 मजदूर काम करते हैं। कैजुअल वरकरों की तनखा 3400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों की तनखा 2600-2700 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रात 10 के बाद रोकने पर रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। यहाँ बाहर से लाये कपड़ों की जाँच के बाद उन्हें रँगाई-छपाई के लिये अन्य फैक्ट्रियों को भेजते हैं और वापसी पर पुनः जाँच के बाद कटिंग होती है। सिलाई के लिये ए-238 ओखला फेज-1 स्थित **पी हँस** फैक्ट्री तथा फैब्रिकेटरों को भेजते हैं। धागे काटने, मोती-सितारे, धुलाई, प्रेस, पैकिंग के कार्य फिर यहाँ होते हैं। माल के बायर **एनजॉय, टोनाला, ऑस्ट्रल, निमुखी, कैलो** कम्पनियाँ हैं।"

कर्टसी होण्डा कामगार : "डी-196 ओखला फेज-1 स्थित होण्डा कार के बिक्री व सेवा केन्द्र पर 50 मजदूर काम करते हैं। दिसम्बर-अन्त में बिना कोई ताले टूटे 22-23 लाख रुपये नकद की चोरी की शिकायत। अगले दिन से ओखला फेज-1 थाने में हर रोज 3-4 मजदूरों को ले जा रहे हैं। मारपीट कर रात 12 बजे छोड़ते हैं। हाजिरी रजिस्टर थाने में ले जाते हैं और क्रमवार बुला कर मजदूरों की पिटाई करते एक सप्ताह हो गया है।"

लिलिपुट किड्स वीयर वरकर : " डी-95 ओखला फेज-1 में कम्पनी का मुख्यालय है और यहाँ तथा डी-41 में परिधानों के सैम्पल बनते हैं। उत्पादन कार्य वाली पाँच फैक्ट्रियों को ओखला से नोएडा, फरीदाबाद, गुड़गाँव स्थानान्तरित कर दिया है। मुख्यालय तथा डी-41 में मजदूरों की शिफ्ट सुबह 9 से रात 9 की है। अकुशल श्रमिकों को 8 की बजाय 12 घण्टे रोज ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन वाले 3953 रुपये देते हैं। उच्च कुशल सिलाई कारीगरों की तनखा 4800 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी **गैप, मदर केयर, प्राइम मार्क** तथा अपने स्वयं के 160 बिक्री केन्द्रों के लिये उत्पादन करती है।"

झुग्गी बस्ती निवासी : " जुलाई 2007 में दिल्ली सरकार ने सर्कल 52 में आते गोला कुँआ, इन्दिरा कैम्प, संजय कॉलोनी, न्यू संजय कैम्प, मजदूर कैम्प, यज्ञशाला कैम्प, अमर ज्योति कैम्प झुग्गी बस्तियों के निवासियों के राशन कार्ड जमा करवाये और नये फार्म भरवाये। राशन कार्ड जमा करने पर दी पर्ची पर दिसम्बर 08 तक डिपो से राशन दिया गया। लेकिन जनवरी 09 से पर्ची पर राशन देना बन्द कर दिया और राशन कार्ड प्रस्तुत करने को कहा। सरकार ने राशन कार्ड दिये ही नहीं.... पचास हजार से अधिक लोगों को डिपो से राशन नहीं। मार्च 09 में सरकार ने फिर फार्म भरवाये, अक्टूबर में तीसरी बार फार्म भरवाये। वर्ष बीत गया, राशन कार्ड नहीं दिये। हम झुग्गी निवासियों को 12 महीनों से डिपो से राशन नहीं मिल रहा।"

सूरत में मजदूर

रंगाई-छपाई मजदूर : "सूरत के पण्डेसरा और सचिन औद्योगिक क्षेत्रों में दस लाख से ज्यादा कपड़ा मजदूर काम करते हैं। अधिकतर मजदूर गुजरात से बाहर के – उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र से। अधिकतर मजदूर छड़े हैं, पुरुष हैं, परिवार गाँवों में। कमरे महँगे हैं, 1000-1500 किराया और पहले तीन-चार हजार रुपये पगड़ी के जमा कराओ। एक कमरे में 4-5 मजदूर रहते हैं। यहाँ साड़ियों और स्त्रियों के सूट के कपड़ों की बुनाई, रंगाई, छपाई होती है। कपड़ा बुनने के बिजली के साँचे 10 से 100 की सँख्या में जगह-जगह भरे पड़े हैं। मजदूर को मीटर के हिसाब से पैसे। रंगाई-छपाई की फैक्ट्रियाँ बड़ी हैं, 500 से 1200 मजदूर एक फैक्ट्री में। कपड़े की बुनाई हो चाहे रंगाई-छपाई, सब जगह 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। काम नहीं करेंगे तो दिहाड़ी नहीं। किसी भी फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। रंगाई हो चाहे छपाई, हैल्पर (बेगारी) को 12 घण्टे के 130 रुपये। रंगाई में चैकर को 12 घण्टे के 150-160 और डाइंग ऑपरेटर को 175 रुपये। छपाई में चैकर को 12 घण्टे के 200 और प्रिन्टिंग ऑपरेटर को 300 रुपये। रंगाई हो चाहे छपाई, नुक्स पर गालियाँ और मारपीट आम बात हैं। फैक्ट्रियों में 12-14 साल के बच्चे भी 12-12 घण्टे की दिन और रात की ड्युटी करते हैं, 12 घण्टे के 130 रुपये। लगातार 36 घण्टे काम करवाते हैं तब रोटी के लिये 25 रुपये देते हैं। इन दस वर्षों में मेरे साथियों और मैंने श्रम विभाग के अधिकारियों को फैक्ट्रियों में नहीं देखा है। एक्साइज वालों को साल में एक चक्कर लगाते अवश्य देखा है। रंगाई व छपाई का कार्य बहुत गर्म काम है। पँखे भी नहीं होते। गर्मियों में मजदूर गाँवों की ओर भागने लगते हैं। मजदूर कम मिलते हैं तब दिहाड़ी बढाने के लिये कुछ दबाव बना पाते हैं। अन्यथा, रंगाई-छपाई मजदूर अब तक ज्यादा दबाव नहीं बना पाये हैं। जबकि, कपड़ा बुनने वाले मजदूरों ने पाँच साल पहले पूरे सूरत में एक महीने काम बन्द कर मीटर रेट बढवाया था। सूरत में सिलाई का काम नहीं होता और हीरे तराशने-चमकाने का कार्य शहर के अन्दर होता है। इधर 5-6 वर्ष से औद्योगिक क्षेत्रों में कम्प्युटर कढाई का कार्य बहुत तेजी से बढा है। चीन निर्मित कम्प्युटर इम्ब्राइड्री मशीनें वातानुकूलित स्थानों पर और ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज कार्य पर 30 दिन के पाँच-सात हजार रुपये, 15-16 वर्ष आयु के सीखने वालों (बेगारी) को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2500-3000 रुपये। महँगाई महिलाओं को नौकरी की ओर धकेल रही है – सूरत में ज्यादा महिला मजदूर महाराष्ट्र से हैं। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री फैक्ट्रियों में 90 रुपये में दिन में 8 घण्टे धागे काटने का कार्य महिला मजदूर करती हैं। दस वर्ष पहले सूरत में 365 रंगाई-छपाई की फैक्ट्रियाँ थी, आज एक हजार से ज्यादा हैं। अब औद्योगिक क्षेत्रों में खाली प्लॉट नहीं दिखते। मजदूरों की आबादी बहुत तेजी से बढी है। औद्योगिक क्षेत्र शहर से 5-10 मील बाहर हैं। पहले बीच में जंगल पड़ते थे, अब सब जुड़ गये हैं। आज सूरत की आबादी 80 लाख बताते हैं। मजदूर काम करें, बस काम करें। कितने ही साल काम करो, रिटायर की, हिसाब की बात ही नहीं है। बोनस नहीं। दिवाली पर मिठाई भी नहीं, पाँच दिन बाद मुहुर्त पर कटोरी-थाली देते हैं। रंगाई और छपाई में रसायनों का थोक में प्रयोग होता है – नुकसान ही नुकसान हैं। फुर्सत नहीं है। मिलने-जुलने के लिये समय ही नहीं होता। वर्ष में एक-दो महीने मन्दी होती है तब महीने में 20-22 दिन ही काम होता है..... समय काटने दौड़ता है..... कमाने आये हैं! पन्द्रह दिन में पैसे मिलते हैं। पगार कहीं फँस जाती है तब यूनियनवालों के पास जाते हैं – पैसे मिलते हैं तब उनमें से 15 प्रतिशत यूनियन वाले ले लेते हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011